वेदों की खुशबू

ओ३म्

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

वेद सब के लिए

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values and Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 71	Year 7	Volume 8	May 2018 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 120-see page 6

शब्द से मौन तक

इस में कोई दो राय नहीं कि ईश्वर की भक्ति हर जगह शव्द से ही शुरू होती है। चाहे यह पाठ मां दे या आध्यात्मिक गुरू । सभी ईश्वर की स्तुती में कुछ बोलने के लिये कहते है। साधारण तया पहले ईश्वर का नाम या उसे कैसे सम्बोदित करें ही बताया जाता है। कोई ओइम कहने के लिये कहता है, कोई ओंकार वहिंगुरू, कोई अल्ला बताता है तो कोई गाोड और कुछ हरे कृष्णा हरे राम को ईश्वर का नाम बता कर बच्चे को इसे याद करने के लिये जपने के लिये कहता है।

उसके बाद ईश्वर से क्या प्रार्थना की जाये, जिसमें की सभी कुछ आ जाता है, जैसे कि ईश्वर का धन्यावाद, ईश्वर की स्तुती प्रशंसा और अपने लिये या दूसरे के लिये कुछ मांगना। यह सभी भी बोलकर ही किया जाता है, चाहे आप साधारण भाषा में ईश्वर से कहें या कोई खास भाषा जो कि आप के सार्म्पदाय में बताई गई है या फिर धार्मिक गुरू ने बताई है। यही नही बहुत से स्थानों पर भाषा पर ही जोर होता है चाहे प्रार्थना करने वाला

Contact :
BHARTENDU SOOD
Editor, Publisher & Printer
231, Sec. 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2016-2018

उसे समझे या न समझे। उस के दिमाग में आध्यात्मिक गुरू या भाषा प्रेमी यह बात ठोक कर भर देता है कि ईश्वर इसी भाषा मे प्रार्थना को सुनेगा। यदि भाषा में गलती हुई तो आपकी प्रार्थना भी फेल है।

इसमें व्यक्ति की कोई गलती नहीं, उसे जैसा महौल मिलता है , जैसा उसे सिखाया जाता है वह वह उस की उपयोगिता पर सोचे बगैर सब कुछ करना प्रारम्भ कर देता है । हर कोई स्वामी दयानन्द या गुरूनानक नहीं होता जो कि छोटी आयु में ही मेघा बुद्धि द्वारा इस बात को समझने की क्षमता रखता हो कि जो मुझे बताया जा रहा है वह गलत है या ठीक या ठीक तो कितना ठीक। यही नहीं हमें साथ में ही इस पूजा, पाठ, हवन, आदि के तौर तारीके भी बताये जाते है। और हमसे यह उमीद की जाती है कि जब हम पूजा पाठ करें उन तौर तारीकों को बहुत अनुशासनमय ढंग से करें। कहने का अभिप्राय यह है कि ज्ञानेद्रिया कही भी सैर कर रहीं हो पर कर्मेद्रिया का काम, यानी की कर्मकाण्ड, ठीक होना चाहिये। यह बात बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि हम में 90 प्रतिशत आहिस्ता आहिस्ता ऐसे बन जाते हैं जिनकी ईश्वर स्तुती कर्मकाण्ड करने तक ही सीमित रह जाती है। वह जो प्रार्थना में कहते हैं न तो उसे समझते हैं और न ही जीवन में ढालने की कोशिश करते है। उदाहरण के लिये शातिं पाठ तो कर लिया पर उसके बाद शातिं को तलांजली है। परत्तु यह ईश्वर स्तुती नहीं बल्कि अपने आप से ही धोखा है। हां यह अवश्य है कि कुछ न करने से यह करना अच्छा है क्योंकि कम से कम वातावरण तो बदलता है और शुद्ध होता है। पुराने समय में जब घरों में आरती होती थी तो यह अवश्य नहीं कि सभी समर्पित भाव से करते थे परन्तु सभी अपना काम छोड़ कर कुछ समय के लिये आ जाते थे। यह बहुत अच्छी बात थी जो कि घर के वातारण को महौल को अच्छा बनाने में सहायक सिद्ध होती थी। चाहे उन में कुछ घर के सदस्य नाम के लिये ही खड़े होते थे। इस में कोई दो राय नहीं जब आरती, पाठ, हवन होता है जो घर का वातावरण अच्छा होता है, मन में शातिं का आभास होता है, घर के सदस्यों में प्रेम उपजता है।

परन्तु जो सच्चा साधक है वह प्रार्थना के साथ मनन, ध्यान और आत्मनिरिक्षण भी करता है। ज ब वह ऐसे करता है तो उसे ईश्वर से बात करने की आदत पड़ जाती है। फिर वह शांत जगह को ढूंढता है जहां कि वह ईश्वर से बातें कर सके और इस बातचीत के दौरान कोई बिघ्न न हो। अपनी बुराईयों और कमियों के बारे में सोच कर उनको सुधारने का संकल्प ले सके। एसी अवस्था में उसे किसी कर्मकाण्ड की आवश्यकता नहीं रहती , न कुछ शब्दों के रूप में बोलने की आवश्यकता रहती है। यही असली भक्ति है और इसे ही ब्रहम यज्ञ कहते है।

परन्तु ब्रहम यज्ञ उसके लिये तो सब से अच्छा है जा कि ईश्वर के रूप को समझ चुका है, मिथ्या ज्ञान से बाहर निकल चुका है, सत्य को समझ चुका है। परन्तु यदि वह चाहता है कि उसके परिवार का वातावरण धार्मिक हो, आसपास का वातावरण धार्मिक हो, उसके बच्चे इस सृष्टि के संचालक ईश्वर को समझे तो उस शब्द में आना ही पड़ेगा। बच्चों की रूचि पैदा करने के लिये कर्मकाण्ड का भी सहारा लेना पड़ सकता है।

मैं एक बार बहुत पहुंचे हुये महात्मा से बात कर रहा था। जिसका ईश्वरीय ज्ञान वेदों के अनुकूल लग रहा था। वह भी निराकार , अजन्मा , सर्वव्यापक ईश्वर को ही मानते थे और घंटो समाधी में लीन हो जाते। परन्तु उनके आश्रम में एक कोने में मन्दिर था जहां मूर्तीयें सजा कर रखी थी। लोग आ रहे थे, मूतीर्यो के आगे बन्दना करते और वहीं कुछ देर बैठ जाते। कई श्रधालू अपने साथ दान दक्षिणा भी लाये हुये थे जो कि चढ़ावे के रूप में डाल देते।

मुझ से रहा न गया मैने महात्मा से पूछ लिया ———महात्मा आप तो निराकार , अजन्मा , सर्वव्यापक ईश्वर को ही मानते हैं । समाधी में कोई मूर्ती आपके आगे नहीं होती तो फिर यह मन्दिर में मूतियां क्यों। वह मुस्कराये और बोले यह मेरे लिये नहीं, यह मेरे आश्रम मे रहने वालों के लिये और जो इस आश्रम को ईश्वर का घर मानकर चले आते हैं, उनके लिये है।

मुझे असमंजस में देख कर वह फिर बोलने लगे———देखिये जिस आत्मिक उत्थान को मैने प्राप्त

किया है, वह कई सालों के तप , तपस्या व अध्यन का फल है, जो कि इस दुनियादारी में रहते हुये सब नहीं कर सकते। पर यह भी सत्य है ईश्वर का सनिध्य सब पाना चाहते है, उस महान शक्ति की शरण में जाना चाहते है, सुख में न सही दुख में उस की याद आ ही जाती है, जब और सब सहारे खत्म हो जाते है तो उस का सहारा ढूंढते है। कुछ को ठीक रास्ता मिल जाता है पर अधिक को नहीं। सब न तो उतना समय दे सकते है और न ही उनमें वह जिज्ञासा है जो कि ईश्वर को प्राप्त करने के लिये चाहिये। ईश्वर बिजली का बल्ब तो है नहीं जो सविच दवाते ही प्रकाश कर दे। उनके लिये इतना ही काफी है कुछ घड़ी वहां बैठ गये जहां ईश्वर का घर वे समझते है। और कुछ न सही मन को तससली तो होती है कि कोई मेरे साथ भी है। यह उम्मीद भी जीवन के लिये बहुत आवश्यक है। कई बार वेचैन मन को शातिं के लिये चले आते है, कई बार ईश्वर से कुछ मांग लेते हैं। यदि इन मूतीर्यो को रखने से उन को ऐसा लगता है कि यह ईश्वर है तो हर्ज क्या है। यह इस बैर वैमनस्य से भरे हुये संसार में यदि कुछ के लिये और कुछ समय के लिये वातावरण को सुखमय बना रहता है तो मैं इस में बुरा कुछ नहीं देखता। इस से कहीं अधिक बुरा यह होगा जब मै स्वयं वहां बैठ कर अपनी पूजा करवाउ या फिर अपनी वहीं कोई मूर्ती रख दूँ।

इस सभी चर्चा से एक बात सामने आती है कि एक सच्चे साधक के लिये कुछ समय बाद शब्द या फिर कर्मकाण्ड का कोई महत्व नहीं रह जाता। वह इन सभी के बिना भी ईश्वर के नजदीक होता है उतना ही नजदीक जितना की एक कर्मकाण्डी सब कुछ करने के बाद भी ईश्वर से दूर होता है। परन्तु फिर भी आप कर्मकाण्ड और शब्द के महत्व का नकार नहीं सकते। ये व्यक्ति को ईश्वर के नज़दीक खींचने के साधन है। परन्तु सच्चा साधक कर्मकाण्ड और शब्द के साथ चिपका नहीं रहता। कुछ समय बाद वह इन से बाहर निकलकर सच्चे परमात्मा की दुनिया की और अग्रसर हो जाता है।

*****

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 120 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दें
2. आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFS Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFS Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFS Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।
5. पैसे जमा करवा कर सूचित अवश्य कर दें।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया **at par** का चैक भेज दे।

ऐसी कर्तव्य निष्ठा ही धर्म है

यह घटना मनाली हिमाचल प्रऐश के एक गांव की है । एक स्त्री आयु 37 वर्ष के बच्चा होने वाला था। वह गांव सड़क से जुड़ा नहीं है। वहां पर किसी तरह का आधुनिक आवागमन का साधन नहीं है। सड़क वहां से चार किलोमीटर है।

इसलिये उस के परिवार के सदस्य उस गर्भवती स्त्री को जिस के कि बच्चा किसी समय भी हो सकता था और स्थिती उनके नियन्त्रण के बाहर थी, एक मोटी चददर में डाल कर , कंधे पर उठा कर किसी नजदीक के अस्पताल में ले जा रहे थे। उन्होने ऐम्बुलैंस 108 के स्टाफ को नजदीक की सड़क पर पहुचंने को कहा था। तभी अचानक संतुलन बिगड़ने के कारण वह औरत चददर से नीचे गिर गई । वह बेहोश थी। उन्होने जांच कर के देखा तो उसकी दिल की धड़कन बन्द थी और नब्ज भी नहीं थी। उनको यह विश्वास हो गया कि वह मर गई है। उन्होने ऐम्बूलैंस वाले को भी फोन कर दिया कि स्त्री की मौत हो चुकी है, अब आने की आवश्यकता नहीं।

ऐम्बुलैंस में टैक्निशयन जुल्फअलीकार और चालक राकेश कुमार थे। जुल्फअलीकार को जब उनका यह फोन मिला कि अब आने की कोई आवश्यकता नहीं क्योंकि गर्भवती स्त्री की मौत हो चुकी है, तो उसने वापिस आने की बजाये वहीं गाड़ी खड़ी कर राकेश कुमार के साथ ,उस गांव की और प्रस्थान शुरू कर दिया और कुछ ही समय में एक नदी के किनारे वे लोग स्त्री के शव के साथ उनको मिल गये। उन्होने सड़क पर जहां गाड़ी खड़ी की थी वह स्थान वहां से 2 किलोमीटर था। इसलिये जुल्फअलीकार ने वहीं पर अपनी प्राथमिक उपचार क्रिया शुरू कर दी। उसने sunctioning की और कुछ देर में ही उस औरत ने बच्ची को जन्म दिया। और फिर उसने cardiopulmonary कि जिस से वह औरत भी होश में आ गई। फिर उन्हें वे अस्पताल ले आये। अब मो और बच्चा दोनो स्वस्थ है।

मैं यही सोच रहा था कि कुछ ऐसी कर्तव्य निष्ठा हम सब में आ जाये तो यह अपराध स्वयं ही खत्म हो जायेंगे, घृणा का स्थान प्यार ले लेगा और हमारे देश की गरीबी खत्म हो जायेगी और यह देश भी रहने योग्य स्थान बन जायेगा। टैक्निशयन जुल्फअलीकार के लिये मेरे दिल में बहुत सम्मान है। वह भी संदेश सुनने के बाद वापिस जा सकता था या फिर औपचारिकता के तौर पर वहां पहुच कर हाजरी लगा कर आ सकता था, जैसे कि हम में 99 प्रतिशत करने के आदि है। पर उसने ऐसा नहीं किया। यही है कर्तव्य निष्ठा।

ऐसी घटनायें स्कूल की किताबों में हानी चाहिये। इस से बच्चों पर अच्छा असर पड़ेगा।

अध्यात्मवाद (Spirituality)

कृष्ण चन्द्र गर्ग

आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, इन दोनों का आपस में सम्बन्ध क्या है - इस विषय का नाम अध्यात्मवाद है। आत्मा और परमात्मा दोनों ही भौतिक पदार्थ नहीं हैं। इन्हें आँख से देखा नहीं जा सकता, कान से सुना नहीं जा सकता, नाक से सूंघा नहीं जा सकता, जिह्वा से चखा नहीं जा सकता, त्वचा से छूआ नहीं जा सकता।

परमात्मा एक है, अनेक नहीं। ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि उसी एक ईश्वर के नाम हैं। (एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति। ऋग्वेद - 1-164-46) अर्थात एक ही परमात्मा शक्ति को विद्वान लोग अनेक नामों से पुकारते हैं। संसार में जीवधारी प्राणी अनन्त हैं, इसलिए आत्माएं भी अनन्त हैं। न्यायदर्शन के अनुसार ज्ञान, प्रयत्न, इच्छा, द्वेष, सुख, दुख - ये छः गुण जिसमें हैं उसमें आत्मा है। ज्ञान और प्रयत्न आत्मा के स्वाभाविक गुण हैं, बाकी चार गुण इसमें शरीर के मेल से आते हैं। आत्मा की उपस्थिति के कारण ही यह शरीर प्रकाशित है, नहीं तो मुर्दा अप्रकाशित और अपवित्र है। यह संसार भी परमात्मा की विद्यमानता के कारण ही प्रकाशित है।

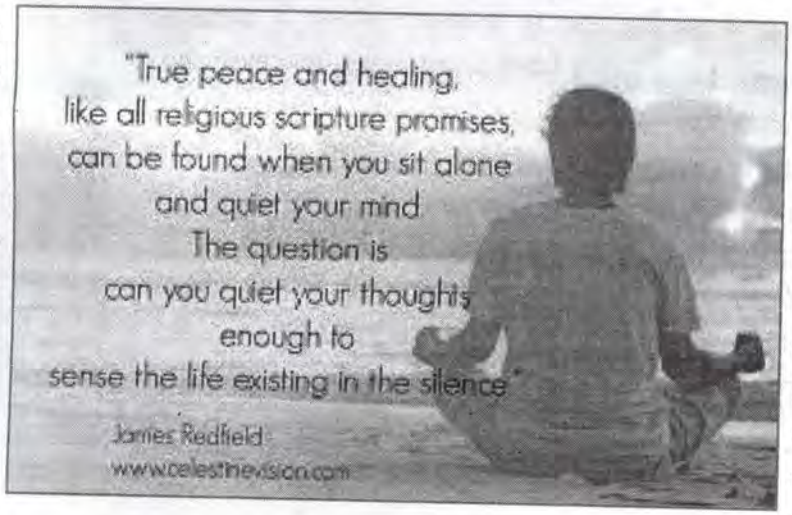

आत्मा और परमात्मा - दोनों ही अजन्मा व अनन्त हैं। ये न कभी पैदा होते हैं और न ही कभी मरते हैं, ये सदा रहते हैं। इनको बनाने वाला कोई नहीं है। आत्मा परमात्मा का अंश नहीं है। हर आत्मा एक अलग और स्वतन्त्र सत्ता है।

आत्मा अणु है, बेहद छोटी है। परमात्मा आकाश की तरह सर्वव्यापक है। आत्मा का ज्ञान सीमित है, थोड़ा है। परमात्मा सर्वज्ञ है, वह सब कुछ जानता है। जो कुछ हो चुका है और हो रहा है सब कुछ उसके संज्ञान में है। अन्तर्यामी होने से वह सभी के मनों में क्या है यह भी जानता है। आत्मा की शक्ति सीमित है, थोड़ी है, परन्तु परमात्मा सर्वशक्तिमान है। सृष्टि को बनाना, चलाना, प्रलय करना - आदि अपने सभी काम करने में वह समर्थ है। पीर, पैगेम्बर, अवतार आदि नाम से कोई एजैंट या बिचौलिए उसने नहीं रखे हैं। अपने सभी काम वह स्वयं करता है। ईश्वर सभी काम अपने अन्दर से करता है क्योंकि उसके बाहर कुछ भी नहीं है। ईश्वर जो भी करता है वह हाथ-पैर आदि से नहीं करता क्योंकि उसके ये अंग है ही नहीं। वह सब कुछ इच्छा मात्र से करता है।

ईश्वर आनन्दस्वरूप है। वह सदा एक रस आनन्द में रहता है। वह किसी से राग-द्वेष नहीं करता। वह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से परे है। ईश्वर की उपसना करने से अर्थात उसके समीप जाने से आनन्द प्राप्त होता है जैसे सर्दी में आग के पास जाने से सुख मिलता है। ईश्वर निराकार है। उसे शुद्ध मन से जाना जा सकता है जैसे हम सुख-दुख मन में अनुभव करते हैं।

ईश्वर की व्यवस्था से यह आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण कर लेती है। वह नया शरीर मनुष्य का या किसी पशु, पक्षी, कीट, पतंग का हो सकता है। ईश्वर मनुष्य के गुण और कर्म के अनुसार ही नया शरीर देता है।

यह आत्मा जब मनुष्य शरीर में होती है तब वह कार्य करने में स्वतन्त्र रहती है। उस समय किए कार्यों के अनुसार ही उसे परमात्मा सुख, दुख तथा अगला जन्म देता है। दूसरी योनियां या तो किसी दूसरे के आदेश पर चलती हैं या स्वभाव से काम करती हैं। उनमें विचार शक्ति नहीं होती। इस लिए उन योनियों में की क्रियाओं का उन्हें अच्छा या बुरा फल नहीं मिलता। वे केवल भोग योनियां हैं जो पहले किए कर्मों का फल भोगती हैं। मनुष्य योनि में कर्म और भोग दोनों का मिश्रण है। मनुष्य स्वतन्त्र रूप से कर्म भी करता है और कर्म फल भी भोगता है।

मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ। शरीर मेरा संसार में व्यवहार करने का साधन है। कर्ता और भोक्ता आत्मा है। सुख-दुख आत्मा को होता है।

जीवात्मा न स्त्रीलिंग है, न पुलिंग है और न ही नपुंसक है। यह जैसे जैसा शरीर पाना है, वैसा वैसा कहा जाता है। (श्वेताश्वतर उपनिषद)

ईश्वर की पूजा ऐसे नहीं की जाती जैसे मनुष्यों की पूजा अर्थात सेवा सत्कार किया जाता है। ईश्वर की आज्ञा का पालन अर्थात सत्य और न्याय का आचरण ही ईश्वर की पूजा है।

ब्रह्मज्ञान - ईश्वर की सत्ता को समझना, उसके गुण-कर्म-स्वभाव को जान लेना, यह जान लेना कि परमात्मा संसार के चप्पे-चप्पे में विद्यमान है, वह हमारे सब कामों को देखता है तथा न्यायपूर्वक उनका फल देता है। इस समझ का नाम ही ब्रह्मज्ञान है।

कठ उपनिषद में मनुष्य शरीर की तुलना घोड़ा गाड़ी से की गई है। इसमें आत्मा गाड़ी का मालिक अर्थात सवार है। बुद्धि-सारथी अर्थात कोचवान है, मन लगाम है, इन्द्रियां घोड़े हैं। इन्द्रियों के विषय वे मार्ग हैं जिन पर इन्द्रियां रूपी घोड़े दौड़ते हैं। आत्मा रूपी सवार अपने लक्ष्य तक तभी पहुँचेगा जब बुद्वि रूपी सारथी मन रूपी लगाम को अपने वश में रख के इन्द्रियां रूपी घोड़ों को सन्मार्ग पर चलाएगा।

उपनिषद में घोड़ा गाड़ी को रथ कहा जाता है और रथ पर सवार को रथी। मनुष्य शरीर में आत्मा रथी है। जब आत्मा निकल जाती है तब शरीर अरथी रह जाता है।

परमात्मा हम सबका माता, पिता और मित्र है। वह सब प्राणियों का भला चाहता है। जब मनुष्य कोई अच्छा काम करने लगता है तो उसे आनन्द, उत्साह, निर्भयता महसूस होती है। वह परमात्मा की तरफ से होता है। और जब वह कोई बुरा काम करने लगता है तब उसे भय, शंका, लज्जा महसूस होती है है। वह भी परमात्मा की तरफ से ही होता है।

ईश्वर का आदेश - जैसे आकाश में बिजली चमकती है और छिप जाती है, इसी बीच कुछ दीख जाता है। इसी प्रकार परमात्मा का आदेश भी बहुत थोड़े समय के लिए होता है। सूक्ष्म बुद्धि वाला मनुष्य उसे जान लेता है।

831 सैक्टर 10
पंचकूला, हरियाणा

*****

WHEN THINGS GO WRONG- FOCUS ON 'SELF'.

Neela Sood

Two real brothers inherited enormous wealth and flourishing business empire from their father. Their egos, varying aspirations and lack of mutual trust soon made them to part ways and each started giving direction to his business in his own way. Soon they were business rivals and it had an impact on their families also. The spirit of share and care gave way to inquisitiveness and suspicion where every one was more anxious to know what was going on across the wall separating their house, and would keep tab on the activities of other. One day, the business empire of one of the brothers, who had not only outshone other in the creation of wealth but had moved many steps ahead, had an income tax raid and lot of unaccounted wealth was unearthed. The aggrieved one lost no time in nailing it on his brother. Families distanced themselves further so much so even on the occasions of joy and sorrow they would not visit each other or would exchange compliments. It continued for ten years when one day the disclosure by one of the servants revealed that it was the doing of his own Accountant (Munim) who was disgruntled on account of being underpaid. But, it was too late. Ten precious years were lost and the events of ten years had left deep scars, not easy to be healed.

It happens with all of us. Most of the times, our aggrieved condition has unfounded and imaginary basis. We may think that some body is after our blood and is hell bent upon to harm us but that person may not be even thinking of us, so immersed in his own life. By our own thinking we have made somebody the cause of our persecution and for all wrong reasons he is occupying much bigger space in our heart than what we have for our near and dear ones. How to get out of this negative mind set which is keeping us unhappy despite of our having everything.

First, remember no body is to blame if we happen to face some difficult time and situation in our life. It is our own creation- what is required that while doing analysis, the focus is on self, and till such time focus is on others we will not be able to come out of the mess created by us. In the above story also, the brother who was implicated by Income Tax authorities was himself responsible for the cause by not paying full taxes and underpaying his employees.

Second, try to find good in every person and in every situation. You'll almost find it as everyone has some goodness in him.

Third, break the high wall of ego and mistrust separating us from others. Even when you feel that it is the other man who is plotting against you; go to him with an open mind to discuss the issue. Your problem may not be over but, you will be saving your self from the negative thoughts and in all probabilities other man will also review his stance towards you.

Last but not the least, make prayer to the Supreme Power a Habit, simply because it is the prayer which takes the mind out of narrowness of self interest and enables us to see the world in the mirror of the holy.

*****

जब काई चीज आपको क्रोधित करती है

नीला सूद

ऐसी स्थिति हम सब के साथ आती है जब दूसरों द्वारा किया गया कृत्य या बात हमें क्रोधित कर देती हैं। हम कितना क्रोध करते हैं यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम अपने आसपास के माहौल के बारे मे कितने असहनशील हैं। अकसर देखा गया है कि ऐसे मौकों पर हर एक व्यक्ति अलग अलग तरह से पेश आता है। उदाहरण के लिये कुछ एक दम उत्तेजित हो कर जवाब दे देते हैं। केछ क्रोधित होकर उंचा बोलना शुरू कर देते हैं। कुछ गुस्से मे पागल होकर गालियां देनी शुरू कर देते हैं और कुछ सब सीमाओं को लांघकर मारपीट भी कर बैठते है। यह भी सत्य है कि हम में बहुंत सारे अपने किये पर पछताते हैं व इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं

कि इन हालात में बेहतर तरीके से पेश आया जा सकता था।

यह भी सत्य है कि हम सब महात्मा सुकरात नहीं बन सकते। कहतें हैं, सुकरात एक बार अपने मित्रों व अनुयाइयो को भाषण दे रहे थे। भाषण सात आठ घटें तक चलता रहा। सुकरात की पत्नी जो चिड़चिड़े स्वभाव की थी यह सब देखकर परेशान थी उसने एक ठण्डे पानी की बाल्टी सब के सामने सुकरात के सिर पर उडेल दी। सुकरात के मित्र व अनुयायी ऐसा अभद्र व्यवहार देख कर दंग रह गये पर महात्मा सुकरात ने सब को यह कह कर शांत कर दिया कि उनकी पत्नी को पता लग गया था कि सात आठ घंटे भाषण देने के बाद मेरा सर बहुत गर्म हो गया था व इसका ईलाज करने के लिये उसने ठन्डे पानी की बाल्टी मेरे सर पर उढेल दी।

न ही हम सतं तुका राम जैसे बन सकते हैं। कहते हैं कि सतं तुका राम की पत्नी भी गुसैले स्वभाव की थी। एक बार जब सतं तुका राम शहर जा रहे थे तो उनकी पत्नी ने उन्हे शहर से गन्ने लाने के लिये कहा। सतं तुका राम ने काफी सारे गन्ने लिये व घर की ओर वापिस चल दिये। थे तो वे संत, रास्ते मे जो भी मिलता उसे एक गन्ना दे देते। जब घर पहुचें तो एक ही गन्ना रह गया था जो कि उन्होने प्यार से अपनी पत्नी को भेंट किया। एक गन्ना पाकर पत्नी का गुस्सा स्वभाविक था व गुस्से मे उसने वह गन्ना सतं तुका राम के सिर पर दे मारा व गन्ने के दो टुकड़े हो गये। सतं तुका राम ने बड़े प्यार से एक टुकड़ा पत्नी की ओर बड़ाते हुये कहा----वाकई ही तुम मेरा बहुत ध्यान रखती हो,वरना मुझे इसके दो टुकड़े करने पड़ते। एक तुम्हारे लिये व एक मेरे लिये।

इसी तरह एक घटना महर्षि दयान्नद के जीवन से हैं। पाखण्डों, अन्धविश्वासों और रूढ़ीवाद के विरूध उनके द्वारा चलाये गये अभियान से एक साधु जिसकी रोजी रोटी ही ऐसे धन्धों से चलती थी, बहुत दुखी व क्रोद्धित था। उसकी कुटिया स्वामी जी की कुटिया के साथ ही थी ।वह रोज सांय स्वामी को अपनी कुटिया के बाहर खड़े हो कर जोर जोस से अभद्र आवाज में गालियां देता था। स्वामी जी के चेल उसे सबक देने के लिये कई बार उनसे अनुग्रह करते परत्तु स्वामी जी उन्हें रोग देते और मुस्करा देते । एक दिन स्वामी जी का ऐ अनुयाई उनें लिये बहुत से फल लाया। स्वामी जी ने एक

*****

थैले में कुछ फल डाले औी अपने एक चेले को कहा कि साथ वाले साधु को दे आओ व साथ मे यह संदेश दिया ——आपकी मुझे गालियां देने में बहुत शक्ति जाती है, यह फल खाईये।। शिष्य फिर हैरान थे, पर कुछ कहं बिना साधु को वे फल देने चले गये। साधु ने वे फल व स्वामी जी का संदेश सुना तो हैरान परेशान था। कहने लगा ——मैं तो रोजाना उनको गालियां देता हूं । उन्होने बुरा मनाने की बजाये मुझे फल भेजे। वह उसी पल भाग कर स्वामी जी के पैरों में पड़ गया और जीवन भर के लिये चेला बन गया।

प्रश्न उठता है कि ऐसी स्थिति मे क्या किया जाये? इसका जवाब यह है कि यदि तो आप स्वामी दयान्नद जैसे महान बन सकते हैं तो जो सवमी जी ने किया वही करें । दूसरा ढंग महात्मा बुद्ध के जीवन की इस घटना से मिलता है। एक बार महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों के साथ एक जगंल से गुजर रहे थे। उन्हे प्यास लगी तो उन्होने अपने एक शिष्य को पास के एक तालाब से पानी लाने को कहा। कुछ देर बाद शिष्य खाली वापिस आ गया व बोला तालाब का पानी मिटटी वाला है। महात्मा बुद्ध ने उसे कुछ देर ठहर कर जाने को कहा। इस बार पानी साफ था।। महात्मा बुद्ध ने समझाया कि पिछली बार जब तुम गये थे, तो एक बैलगाड़ी यहां से गुजरी थी स्वभाविक है कि तालाब के उपर से गुजरने के बाद सारा पानी हिल गया पर कुछ देर बाद मिटटी बैठ गई व उपर का पानी साफ हो गया।' इसी तरह दैनिक जीवन में कोई बात आपको कोद्धित कर देती है तो एकदम प्रतिक्रिया ;तमंबजद्ध न करें। थोड़ी देर के लिये रूक जायें अपने आपको किसी और कार्य मे लगा दें।

ऐसा करने से आप ऐसी बहुत सी परीस्थतियों से बच सकते हैं जिनके लिये आप को बाद में पछताना पड़े या सबंधो में एक दरार बन जाये।

ऐसा क्रोद्ध भी क्या जो जीवन भर पछताना पड़े

यहां यह बताना आवश्यक है कि लेखिका का ईशारा उसी कोद्ध की तरफ है जो कि अनावश्यक अहंकार से पैदा होता है न कि उस की तरफ जो कि अन्याय से लड़ने के लिये व किसी का सुधार करने के लिये आवश्यक है। एक के बाद एक योन अपराध हो रहें हैं और आप कोद्ध न करें वह भी गलत है ऐसा कोद्ध सभी महान व्यक्तियों ने स्थिती आने पर दिखाया।

*****

पत्रिका में दिये गये विचार लेखकों के अपने हैं। सम्पादक जरूरी नहीं उस से सहमत हो। लेखकों के टैलीफोन नम्बर दिये है, आप सम्पर्क कर सकते है। आपके लेख के बारे में विचार अवश्य प्रकाशित किये जायेंगे।

न्यायिक प्रक्रिया के लिये चण्डीगढ़ न्यायलय ही मान्य है।

जब काई चीज आपको क्रोधित करती है

अगर इस दुनियां में रहते हुये हम सिर्फ अपने हित के बारे में ही नहीं सोचते रहते बल्कि दूसरों के बारे में सोचने की आदत है, तो विश्वास करें इर्श्वर किसी घंटी वाले घोड़े को हमारी सहायता के लिये भेज देगा।

कई बार आते जाते मैं अक्सर एक खेत में दो घोड़ों को सदैव एक साथ देखता था। एक बार मैं उत्सुक होकर उनके पास चला गया। क्या देखता हूं कि एक घोड़ा अन्धा है व देख नहीं सकता। पर उसके मालिक ने उसको छोड़ नहीं दिया था उसके लिये भी अच्छा अस्तबल बनाया हुआ था।

कुछ देर बाद क्या देखता हूं कि पास से ही घंटी की आवाज आ रही है। आस पास देखा तो पता लगा कि यह आवाज पास में ही दूसरे घोड़े से आ रही थी जो कि उससे थोड़ा छोटा था। उसके पास जा कर देंखा तो पता लगा कि उसके मालिक ने उसके गले में घंटी बांध रखी थी ताकी बड़ा घोड़ा, जो कि देख नहीं सकता था, इस छोटे घोड़े की आवाज को सुनकर उसके साथ ही रहे। कुछ देर खड़ा रहा तो क्या देखा कि घंटी वाला घोड़ा अन्धे घोड़े पर नज़र रखता है व इस बात का ख्याल रखता है कि यह घंटी की आवाज सुनकर उसके साथ ही रहे, और इस बात का ख्याल जब तक शाम को वे दोनो अस्तबल में इकटठे वापिस न चले जाये तब तक रखता था। इस अन्धे घोड़े के मालिक की तरह हमारा भी यह कर्तव्य बनता है कि जो हमारी तरह भाग्यशाली नहीं हैं उनके बारे में सोचे व उनकी ज़रूरत के अनुसार जीवन जीने के साधन अपनी शक्ती अनुसार बनाने का प्रयत्न करें।

जीवन काफी बड़ा, उतार चढ़ाब व विशमताओं से भरा है। हो सकता है कि कहीं हम घंटी वाले घोड़े की तरह हो तो दूसरी जगह अन्धे घोड़े की तरह। पर अगर दूसरों के बारे में सोचने की आदत है जो जीवन हर हालत में हंसते खेलते कट जायेगा और जब हम अन्धे घोड़े की तरह होंगे तो ईश्वर किसी घंटी वाले घोड़े को हमारी सहायता के लिये भेज देगा।

श्री नीरज कौड़ा जी द्वारा आप सब के सहयोग से चलाये जा रहे महर्षि दयान्नद बाल आश्रम भी इस घंटी वाले घोड़े की सोच को आगे ले जा रहा है। आश्रम द्वारा किये जा रहे कार्यो में तेजी से बड़ोतरी हुई है । अब यह संस्थान सलम स्कूल भी चला रहा है।

*****

बच्चे चाहे कहीं भी हो हमारी सांझी धरोहर हैं। मानवता का भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि बच्चों का पालन पोषण किस तरह किया जाता है। आप बच्चों का पालन पोषण बहुत अच्छा कर रहे हैं यह अच्छी बात है पर साथ ही यह अच्छा होगा कि अपने हृदय में हम थोड़ा स्थान उन बच्चों के लिये भी रखें जो इतने भाग्यशाली नहीं जितने आप के बच्चे हैं। जब हम ऐसा करते हैं तो अपने बच्चे का भविष्य अच्छा बनाते हैं।

बच्चो को कम साधनों में रहने की आदत डालें

स्वामी सम्पूर्णानन्द

अभी हाल में मुझे पिपली वाले स्वामी सम्पूर्णानन्द जी का उपदेश आर्य समाज सैक्टर 32 के वेद प्रचार सप्ताह मं सुनने को मिला। उन्होने बहुत ही व्यवहारिक बातें कही जिन में एक बात यह थी कि आप अपने बच्चे को एक महीने के लिये उनके पास गुरूकुल में भेजें जहां वह सीखेगा कि कम साधनों में जीवन कैसे जिया जाता है। आगे उन्होने जो बात की वह उस से भी उपयोगी है———हम आज अपने बच्चों को इतने साधन दे रहे है कि अगर उसको किसी कारण वश वे मिलना बन्द हो जायें तो वह इतना घबरा जाता है कि उसकी आत्महत्या करने तक की नौबत आ जाती है। उनकी भाषा में या तो मर जायेगा या किसी को मार देगा। यह बात हम सब के साथ है। आपको किसी दूसरे की और देखने की आवश्यकता नहीं। जिस तरह आपने अपना *बाल्यकाल जिया था* और जिस तरह आपके बच्चें जी रहें हैं उस में जमीन आसमान का फर्क है। आप को यह पढ़कर हैरानगी होगी कि एक मध्यम वर्ग के परिवार का बच्चा यदि कालेज या युर्निवसटी जाना हो तो सथानिय बस का प्रयोग करने से इन्कार करता है जब कि आपके चण्डीगढ़, पंचकुला और मोहाली में चलने वाली आधी बसे वाताअनुकुलित है।

मेरा अपना मानना है कि यदि बच्चे ने कम साधनों में जीना सीख लिया तो जिन्दगी की आधी लड़ाई उसने जीत ली। मुश्किले और जीवन के उतार चड़ाव उस का मनोबल नहीं तोड़ सकते।

बच्चे का गुरूकुल में एक महीना बिताने का उनका सुझाव बहुत ही अच्छा है। उन्होने तो यह भी कहा कि कोई शुल्क नहीं देना होगा। परन्तु जहां हम हजारों में दूसरी जगह खुशी से खर्च देते है तो यहां भी खर्चने में कोई परहेज नहीं होना चाहिये। जो आप का बच्चा सीखेगा उस का सुख आप को भी मिलेगा। मैं जानता हूं कि हमारे शहर में वैसे तो गुरूकुल में शिक्षा के लिये कोई नहीं भेजेगा। वे भी नहीं भेजते जो कि गुरूकुलों से पढ़कर सफल जीवन जी रहें है। परन्तु साल में एक महीना जब बच्चे को छुटियां हों तो इधर उधर भेजने की बजाये कहीं अच्छा है कि गुरूकुल वातावरण में जीवन उपयोगी बातें सीखी जायें।

स्वामी जी ने अपने भाषण में, बहुत साधारण भाषा में मन्त्रों के चक्कर में पढ़े बिना, वही बातें की जिनके प्रचार के लिये महर्षि दयान्नद ने आर्य समाज बनाया थ।। एसे ही प्रवचन आर्य समाज में होने चाहिये तभी वेद प्रचार का फायदा है।

*****

DRINKING COLD WATER AFTER MEALS

It is very soothing to have cold water after the meals, especially in summer. However it has it's harms from health point of view. The cold water solidifies the oily stuff that you had just consumed. It slows down the digestion. Once this 'sludge' reacts with the acid, it disintegrates and is absorbed by the intestine faster than the solid food. It forms a layer inside the intestines. Very soon, this turns into fats and can lead to ulcer like ailments. It is best to drink hot soup or warm water after a meal. Taking hot water has countless benefits. It helps in cure of all ailments right from cough to stomach disorders

Expecting crime to go down? You are wrong

If you think that the recent spurt in the crimes like rape, molestation, snatching will go down with harsher punishments, perhaps you are wrong. Reason, we have politicians like Ram Bilas Sharma, education Minister Haryana, who are determined to keep the schools nonfunctional and this abysmal state of schooling has direct impact on crime graph.

The storm that was supposed to rattle Haryana and Chandigarh on 8th and 9th May turned out to be a tame affair with low velocity winds and rain which we encounter every now and then. What is very interesting that meteorological department put up a very cool defense by stating that our forecast did not have any unusual alarm? It was a routine forecast. If a few authorities acted with excessive caution we can't help.

Ram Bilas Sharma

Meteorological Dept is on dot. Panchkula and Chandigarh are twin towns. While in Chandigarh it was a bureaucratic decision, the schools were closed only for a half a day that also on Monday in the afternoon. But, in Haryana it was a politician in Hon'ble Education Minister who took the decision of closing schools for two days. It looks he had his own perception of storm, different from others. He saw it as a good opportunity to please lacs of teachers and declared two days holidays. After all Haryana elections are not far and teachers constitute a big vote bank. We are told that Prime Minister's office took exception to Education Minister's extraordinary step but it had no effect otherwise at least on second day, we'd have seen schools operational, which didn't happen.

What really shocks me that while schools remained closed for two days for no justified reason; nobody showed any concern including our media. Had Govt. closured liquor shops and night clubs for two days, we would have seen hue and cry of all sorts, with many rights activists jumping in fray. **It shows that we do not attach any importance to school education.** And if you ask me, this horrible state of school education is driving our children to crimes of all sorts which is supported by the fact that amongst criminals, **there is an increasing number of juvenile and school drop outs**. Today India is divided in to two halves. One comprises 15% of our population, who do not rely upon schools or Govt. hospitals. They have access to tutors and famed coaching centers to drive their children to the educational institutes of repute. For them it hardly matters whether school is closed or open, rather they feel happy if schools are closed because school enrollment is dummy for them. It is the poor man who suffers simply because he willy- nilly depends upon schools for the education of his children.

What happens when schools are closed? Today in all families especially from lower strata both wife and husband go to work, otherwise smoke will not come from the hearth of their kitchen. When such unexpected closure of schools is announced, it comes as a problem for them. Where to leave the child? In normal course, he would have got mid day meal but now that arrangement is also required to be made. When child is left alone, most likely he is lured to TV, internet and phones, which are indirectly feeding crimes. It is not for nothing that High court Judge, Hon'ble Justice Daya Chaudhry also squarely put blame on the these gadgets for this spurt in crimes.

Through this column I want to make a request that our authorities should think twice before ordering closure of schools. Let us remember Mahatma's talisman, 'When you take a decision, keep poorest of the poor in your mind'. In my opinion, such decisions should rest with the bureaucrats. When schools function only then one can improve quality of teaching. Otherwise by creating two Indias we are unknowingly making this country a rape republic, literally and metaphorically for which history will never pardon us.

यह ईश्वर का निरादर ही तो है

अशोक कुमार

सम्पूर्ण संसार पृथ्वी, जहां भी जीवन विद्यमान है, हर प्राणी एक ऐसी शक्ति का होना मानता हैं । जिसपर सारा संसार, जगत्, ब्रह्माड, जीवन भौतिकता, वृक्ष सम्पदा, आकाश, जलवायु आदि का कर्णधार है । हर देश में उस शक्ति को भिन्न–भिन्न नामों, संज्ञा आदि से माना जाता है । जिसको प्रभु शक्ति का नाम दिया हुआ है । हर एक ने अपने ढंग से इस शक्ति को आकार, कृति, परिधि से माना है । मानव जगत् की ऐसी आस्था, विश्वास है कि संसार में हर एक किया, उस शक्ति के दिशा–निर्देश अनुसार नियन्त्रित है । ऐसा भी माना जाता है कि वह शक्ति सर्वव्यापक, सर्वोच्च है और उसको हर मनुष्य अपने विधि से उसकी पूजा, अर्चना, साधना करता है । पश्चिमी देशों में यशु के नाम से, मुस्लिम देशों में अल्लाह के नाम से याद करते हैं । भारतवर्ष भिन्न–भिन्न धर्मों का देश है, मुख्यतः हिन्दु धर्म है । अधिकतर लोग बुत–मूर्ति पूजा में अटूट विश्वास रखते हैं । कोई भी कार्य जन्म, मृत्यु, समारोह, उत्सव, कोई भी दिन प्रभु पूजा बिना आरम्भ और सम्पन्न नहीं होता । हमारे देश में अनेक देवी–देवताओं को कागज पर, मिट्टी को आकार देकर अर्चना अपने ढंग से करते हैं । लोगों का इतना अंध–विश्वास है कि वह भूल जाते हैं कि जिस शक्ति को वह आकार देकर उसकी पूजा और उपासना करते हैं, कहीं उसका अपमान, निरादर तो नहीं हो रहा । अक्सर देखने में आता है कि जो शक्ति, "प्रभु" उनके लिए सर्वस्व है, उसका सम्मान होने के बजाय निरादर भी कम नहीं होता । निरादर करता कौन है ? उत्तर है, केवल आस्तिक समुदाय । प्रश्न उठता है कि निरादर कैसे होता है?

यह अक्सर देखा गया है कि हमारे समाज में प्रभु भक्ति आस्तिकाता कारण, उसका प्रर्दशन करने के लिए, विवाह, जन्मदिन, समारोह के निमन्त्रण–पत्रों पर प्रभु चित्र अंकित करते हैं, विजिटिंग कार्डों, नववर्ष डायरी, पाकेट, टेबल कैलेंडरस, मिठाई के डिब्बों पर प्रभु के अलग–अलग चित्रों को दिखाते हैं । बात यहीं नहीं समाप्त हो जाती । धर्मिक उत्सव, जगरातों के निमन्त्राण–पत्राों , त्यौहारों के पैम्फ्लेट, इश्तिहार नववर्ष के बधाई कार्ड पर, प्रभु भगवान् के चित्रा बनाये जाते हैं । जिसमें मुख्यतः यशु, दुर्गा, लक्ष्मी, गणेश, कृष्ण, हनुमान शिवजी के चित्रा प्रकाशित किये जाते हैं । कुछ कार्डों पर स्वासतिक, ;ब्द्धॐ स्लीप का शब्द लिखा जाता है, जो कि अपने धर्मों में विशेष महत्व रखते हैं । रक्षाबन्धन पर रखड़ियों पर भिन्न–भिन्न प्रभु–चित्रा बनाते हैं, धूप की डिबिया पर भी प्रभु–चित्र दिखाये जाते हैं । देखने में तो यह भी आया है कि कुछ लोग टूटी या पुरानी मूर्तियों को किसी वृक्ष के नीचे छोड जाते हैं । ऐसा करने से उन्हे लगता है कि लक्ष्मी, शिव, गणेश की कृपा अधिक आयेगी और किसी भी कार्य के सम्पन्न हाने की अपेक्षा करते हैं ।

पर देखने में आया है कि जब वर्ष, उत्सव, पूर्ण हो जाते हैं तो इन देवी–देवताओं के चित्रों की यात्राा कूड़ा–कर्कट के ढेरों

की तरफ निकल पड़ती है । वर्षा का पानी इनको सड़क पर ले आता है जहां मानव पैरों, वाहनों के नीचे आकर कुचले जाते हैं । यह कैसा आदर, आस्था, सम्मान है । कुछ एक को तो कूड़ा–कर्कट के ढेरों पर बैठना पड़ता है । सड़कों पर जानवरों और वायु वेग के थपेड़े सहने पड़ते हैं, अधिक सामग्री को स्कैप डीलर की डयूढी चढ़कर कबाड़ के सामान में सांस लेनी पड़ती है । इससे धर्मिक समुदाय को अति पीड़ा पहुंचती है । क्या यह अनादर नहीं ? कई दफा तो कार्डों से मल–मूत्रा, फल–सब्जियों के छिलके साफ किये जाते हैं, सर्दियां में हाथ सेंकने के लिए भी प्रयोग में लाये जाते हैं । कुछ लोग तो छोटी धर्मिक पुस्तकों को अपनी जेब में रखकर प्रभु भक्ति का प्रदर्शन करते हैं और भूलकर शौचालय तक प्रवेश कर जाते हैं । जेब में धर्मिक सामग्री रखना प्रभु–भक्ति नहीं बल्कि अनादर है । यही नहीं हमारे पड़ोस में जहां मैं पहले रहता था, एक व्यक्ति के घर के पीछे की और लोग कूड़ा पोलीथीन में फैंक जाते थे। उसने अपनी समस्या का समाधान करने के लिये , जिस स्थान पर कूड़ा फैंका जाता था वहां पर शिव जी की छोटी प्रतिमा लगा दी। प्रतिमा कूड़ा कर्कट में रहे कोई बात नहीं। मुझे कुछ दुटकारा मिले। क्या आप इसे ईश्वर भक्ति कहेंगे?

कभी–कभी तों वैदिक मन्त्रों का शुद्धि, करूणा–कामना दुःख–निवारण, पाप हरण के लिए वितरण किया जाता है । जो कुछ समय पश्चात् भूमि पर मानव चरण–कमलों का स्पर्श पाते हैं । यह सत्य है कि, इन चित्रों को देखकर कुकर्म,कुमार्ग और कुविचारों से दूरी बनती है । पर सुचेत रहना अति आवश्यक है कि ऐंसा करने से सभी शक्तियों का अनादर तो नहीं हो रहा। इसके लिए हमें आगे आना चाहिए और भारतीय संस्कृति और प्रभु भक्ति को पवित्रा रखने के लिए प्रयास करने चाहिए ।

अशोक कुमार उप–आबकारी और कर कमिशनर पंजाब
;सेवा निवृतद्ध मो. 9878922336

*****

TIME TO LAUGH

A man placed some flowers on the grave of his * dearly parted mother and started back toward * his car when his attention was diverted to another *
man kneeling at a grave. The man seemed to be praying with profound intensity and kept repeating, 'Why did u have to die?
Why did you have to die?" *
The first man approached him and said, *
Sir, I don't wish to interfere with your private grief, but this
demonstration of pain is more than I've ever seen before. For whom do you mourn so Deeply? A child? A parent?"
*The mourner took a moment to collect himself, then replied My wife's first husband."
A man was leaving a cafe with his morning coffee when he noticed a most unusual funeral procession.
A funeral coffin was followed by a second one about 50 feet behind the first. Behind the second coffin was a solitary man walking with a black dog. Behind him was a queue of about 200 men walking in single line.
The man couldn't stand his curiosity. He approached the man walking with the dog, 'I am so sorry for your loss, and I know now is a bad time to disturb you, but I've never seen a funeral like this with so many of you walking in single line. Whose funeral is it?'
The man replied, 'Well, that first coffin is for my wife.'
The inquisitive man asked, 'What happened to her?'
The man replied, 'My dog attacked and killed her.'
He inquired further, 'Well, who is in the second coffin?'
The man answered, 'My mother-in-law. She was trying to help my wife when the dog attacked and killed her also.'
A thoughtful moment of silence passes between the two men.
Then the first one asks in excitement **'Can I borrow the dog?'**
Gentleman , you can join the queue.

*****

पुस्तक

(English book of short stories)

सम्पादक व उनकी पत्नी नीला सूद ने अपनी लिखी व विभिन्न अंग्रेजी समाचार पत्रों में छपी 70 कहानियों का संग्रह एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया है जिसका नाम है Our musings। इसकी कीमत 150 रूपये है।
जो भी इसे लेने के इच्छुक हों वह मात्र 100 रूप्या भेज कर या हमारे किसी भी बैंक ऐकांउट(Bank Account) में पैसे डाल कर मंगवा सकते है। भेजने का खर्चा हमारा होगा। Account Nos वही हैं जो वैदिक थोटस पत्रिका के लिये है।

मंगवाने से पहले निम्न बातों का कृपया ख्याल रखें
पुस्तक अंग्रेजी भाषा में है। **Book is in English**
कहानियां धार्मिक नहीं परन्तु जीवन के विभिन्न पहलुओं से जुड़ी है। **Stories are on various aspects of human life.**

नीला सूद, भारतेन्दु सूद
0172–2662870, 9217970381

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)
Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

सब से उत्तम दान

महात्मा बुद्ध एक स्थान पर धर्म प्रचार कर रहे थे। प्रभावित होकर वहां के जमींदार ने वहुत बड़ी ज़मीन दान में दी। बुद्ध ने अपने स्थान पर बैठे– बैठे ज़मीन के कागज़ स्वीकार किए,फिर वहाँ का सब से धनाडय व्यक्ति उठा व बहुत बड़ी राशी दान मे दी। बुद्ध ने उस धन राशी को भी अपने स्थान पर बैठे– बैठे ही स्वीकार किया। इतने में एक बुढ़िया भीड़ को चीरती हुई आई और एक पोटली झुक कर बुद्ध को देनी चाही। बुद्ध अपनी जगह से उठे व बहुत आदर भाव के साथ वह पोटली झुक कर स्वीकार ली। सब हैरान थे कि ज़मीन व आपार धन राशी तो बुद्ध ने बैठे–बैठे स्वीकार की और एक गरीब बुढ़िया की छोटी सी पोटली खड़े होकर ली। बुद्ध बोले ज़मीन व अपार धन राशी देने वालो ने तो अपनी अपार सम्पदा का कुछ हिस्सा दिया है पर इस बूढ़ी मां ने जो इस के पास था सब दे दिया। इस लिये इसके दान का कोई मुकाबला नही व झुक कर स्वीकार किया।

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA
D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

Crime and Clamour for new laws

Bhartendu Sood

Every horrific rape that grabs headlines in our media, sets off a fresh clamour for harsher and more deterrent laws and our legislatures, who see it as an easy tool to please the angry masses, hardly take any time to legislate or pass ordinances. Both legislature and people are content with the making of rules. No wonder no country can match India in number of rules and regulations. Not long back, in 2013, in sequel to uproar raised by public after Nirbhaya case, our judiciary not only made correction in existing provisions of the justice system but added many new sections to S 376 IPC like Sections 376A,376 B,376 C,376 D and 376 E on the recommendations of Justice Verma Committee report. Same is the case with S 354 IPC, dealing with assault on woman. While English alphabets are only 26 , it looks that soon we may run out of alphabets if this process continues.

But, looking at the alarming situation of crime rate despite so many corrections in the judicial system, one is forced to conclude that laws have their limitations when it comes to their deterrent effect and better course will be to give a thought how we can make our society civilized. Fact is that though we project ourselves to be the spiritual guru to the whole world but most of the times, we are found wanting in civilized behavior and people in other countries appear far ahead of us. India's claim to civic decency has effectively been punctured. **Now we are a rape republic, literally and metaphorically.** If we think harsher laws can rectify the situation, we are badly mistaken. Indeed laws are not the answer as this anecdote suggests.

During my train travel from Beijing to Xian, much to my dislike I was having the upper berth. After the train started, I noticed that the lower berth was unoccupied and this prompted me to move on to that. But, just then I realized that I was in an alien country and must check the rules.

Fortunately for me, a girl, Dong Fiang Fie, on the opposite berth knew English so I decided to share my problem with her. "It is like this. I am plus sixty. I'll feel more comfortable on the lower berth. I really don't know if I could continue occupying this berth?" She went out of the cabin and was back after 10 minutes with the TT of the coach. I was told that if the original allotee did not turn up at the next station, I would be allotted that berth. When the next station passed and the lower berth remained vacant, TT came to my cabin and asked me to pay 25 Yuan for taking lower berth. Bewildered, I asked why I should pay that extra money.

"These are the official charges for changing the berth." TT replied. Quintessential Indian that I am, I immediately converted 25 Yuan in to rupees. "Oh, Rs 250! Why should I spend Rs. 250 when I can very well manage in the upper berth?" I thought to myself and said to the TT with a sheepish grin; "If it means extra money, I am happy in my originally allotted berth" and TT went back. It looked that my conduct had left Dong wondering so to revive our tete-a- tete, I said to her, "I must tell you that in our country plus sixty persons have many privileges as a matter of rules and laws. My request was purely in the back drop of that and continuing in the same vein, I narrated all the privileges that I enjoyed as a senior citizen as a matter of rules."

"Oh, your country takes good care of its elderly citizens. Really great! " Dong commented. We chatted on other subjects for some more time. Now it was time to retire to sleep. Dong standing before me quipped with her usual smile, "Look, my country doesn't have many rules and laws as your country has but there is always a room for basic etiquette and normal courtesies. I think you deserve the lower berth more than me" and before I could react, she was already up there.

*****

ईश्वर ने हमें क्या-क्या दिया है?

मनमोहन आर्य

ईश्वर है या नहीं? यदि है तो उसने हमें क्या–क्यादिया है? इस प्रश्न पर स्वाभाविक रूप से मनुष्य के मन में कई विचार आ सकते हैं। प्रथम प्रश्न पर विचार करें तो हमें मनुष्य की शक्तियों पर विचार करना पड़ता है। मैं मनुष्य हूं परन्तु मेरी शक्तियां सीमित हैं। मैं हर काम नहीं कर सकता। अनेक काम मुझे दूसरों से कराने पड़ते हैं या मिलकर करने होते हैं। मैं घर में जल का प्रयोगकरता हूँ। हमारे घर में जल का कनेक्शन है। किसी स्थान से सरकारी विभाग के लोगों द्वारा पानी एकत्र करके उसे स्वच्छ किया जाता है और उसे पम्प करके नगर आदि में भेजा जाता है। यदि यह व्यवस्था न हो तो मेरा जीवन कठिनाईयों व संघर्ष में पड़ जाता है।

हम जो भी कार्य करते हैं उसमें हमें अन्य लोगों की सहायता लेनी ही पड़ती है। हम अपनी आंखों से सूर्य, चन्द्र, पृथिवी व पृथिवी के भिन्न–भिन्न स्थानों व पदार्थों को देखते हैं। ये सब कुछ किसी मनुष्य व मनुष्य समूह ने नहीं बनाये हैं। कोई भी मनुष्य एकाकी व संगठित रूप से भी इन दृश्यमान लोक–लोकान्तरों व पदार्थों निर्माण नहीं कर सकता।

इस उदाहरण से मनुष्य से भिन्न एक अदृश्य सत्ता के अस्तित्व का ज्ञान होता है। सूर्य किसने बनाया? इसका उत्तर है कि यह मनुष्य व मनुष्यों के समूह ने नहीं बनाया। यह एक अदृश्यसर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक सत्ता की कृति या रचना है। यही उत्तर चन्द्र, पृथिवी, समुद्र, पर्वत, वन, वनस्पतियों, मनुष्य व अन्य प्राणियों सहित अग्नि, वायु, जल, आकाश, शब्द आदि पर भी लागू होते हैं अर्थात् ये सभी पदार्थ मनुष्य द्वारा नहीं अपितु मनुष्य से अलग किसी अन्य सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, अनादि,अनन्त, नित्य, चेतन सत्ता के द्वारा बनाये गये हैं। उसीसत्ता को ईश्वर कहते हैं।

संसार का होना और इसका व्यवस्थित रूप से काम करना इसके निर्माता ईश्वर का ज्ञान करा रहा है। ईश्वर का होना सत्य, सिद्ध एवं प्रत्यक्ष है। सिद्धान्त है कि रचना विशेष को देखकररचयिता का ज्ञान होता है। विज्ञान व नास्तिकों के पास भी इस सृष्टि रचना के रचयिता वा सृष्टिकर्ता का यथार्थ व सत्य ज्ञान नहीं है। वेद, योग–वेदान्त दर्शन, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों के अध्ययन से ईश्वर का निर्भ्रान्त ज्ञान होता है। अतः बुद्धि व तर्क के आधार पर ईश्वर का होना, उसे मानना, आदर व सम्मान देना मनुष्यों व विद्वानों का कर्तव्य निश्चित होता है।

ईश्वर का अस्तित्व है, यह जान लेने के बाद हम संक्षेप में यह विचार करते हैं कि हमें ईश्वर से क्या–क्या मिला है? हम मनुष्य अपने बारे में बहुत सी बातें जानते हैं और बहुत सी नहीं जानते। हम दूसरों को देखकर अपने बारे में अनुमान करते हैं कि वर्षों पूर्व अन्य मनुष्यों की सन्तानों के समान अपने माता–पिता के द्वारा हमारा जन्म हुआ था। हम शिशु रूप में इस संसार में आये थे। जन्म से पूर्व 9–10 माह तक हम माता के गर्भ में थे। उस गर्भ के आरम्भ काल से पूर्व हम कहां थे?,हममे से शायद कोई नहीं जानता। हम इस प्रश्न पर कभी विचार ही नहीं करते परन्तु दार्शनिक मनीषी व विद्वान ऐसे प्रश्नों पर भी विचार करते हैं व उनका उत्तर खोजते हैं। विचार करने पर एक तथ्य हमारे सम्मुख आता है कि हमारा अस्तित्व व सत्ता स्वयं सिद्ध है। मनुष्य आदि का बच्चा पूर्व जन्म के अनेक संस्कारों के साथ जन्म लेता है। दो सगे भाई–बहिनों के गुण, कर्म, स्वभाव, योग्यता, आकृति–प्रकृति व क्षमतायें एक समान नहीं होती। इससे उसका पूर्व जन्म सिद्ध होता है। मृत्यु के समय भी शरीर से आत्मा या चेतना तथा सूक्ष्म ज्ञान व कर्म इन्द्रियों सहित प्राण, मन, बुद्धि आदि अत्यन्त सूक्ष्म तत्वों से बना एक अदृश्य शरीर, हमारे भौतिक शरीर को छोड़कर चला जाता है। शरीर से उसके निकलने का नाम ही मृत्यु होता है। अतः जन्म से पूर्व व मृत्यु के बाद भी हमारी अर्थात् हमारी आत्मा, जो कि वस्तुतः हम हैं, की सत्ता विद्यमान रहती है।

संसार में मनुष्यों व इतर प्राणियों के जन्म व मृत्यु के चक्र को देखकर यह अनुमान होता है कि संसार में आत्मा के जन्म व मरण का चक्र अनादि काल से चला आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा क्योंकि मनुष्य का जन्म किसी उद्देश्य विशेष से किसी अन्य बड़ी व सर्वशक्तिमान सत्ता ईश्वर से होता है। विचार करने पर वह उद्देश्य आत्मा को मनुष्य वा अन्य योनियों में होने वाले दुःखों की निवृत्ति व आनन्द की अवस्था प्राप्त करने के लिए होता है। यह आनन्द की अवस्था मोक्षकहलाती है। यह ज्ञान व सद्कर्मों को करने पर प्राप्त

होती है। सद्कर्मों का ज्ञान कहा से प्राप्त होता है? इसका उत्तर यह है कि वह ज्ञान परमात्मा से प्राप्त होता है।

परमात्मा ने वह ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में चार वेदों के रूप में दिया है। हमें संस्कृत का अध्ययन करं या वेदों के हिन्दी, अंग्रेजी व अन्य भाषाओं के भाष्यों सहित प्राचीन ऋषियों के ग्रन्थों के अध्ययन से सत्य व यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है। वेद विरुद्ध कर्म निन्दनीय एवं त्याग देने योग्य होते हैं। वेद विहित कर्मों को करने से मनुष्य उनके फल के रूप में दुःखों के स्थान पर सुखों को प्राप्तकरता है। मनुष्य यदि अपने सभी पूर्व दुष्ट व पाप कर्मों को भोग ले, इस जीवन में बुरे व पाप कर्म न करें, वेदों का ज्ञान प्राप्त कर लें और ईश्वरोपासना व यज्ञ आदि कर्मों को करते हुए समाधि अवस्था में ईश्वर का साक्षात्कार कर ले, तो उसे मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

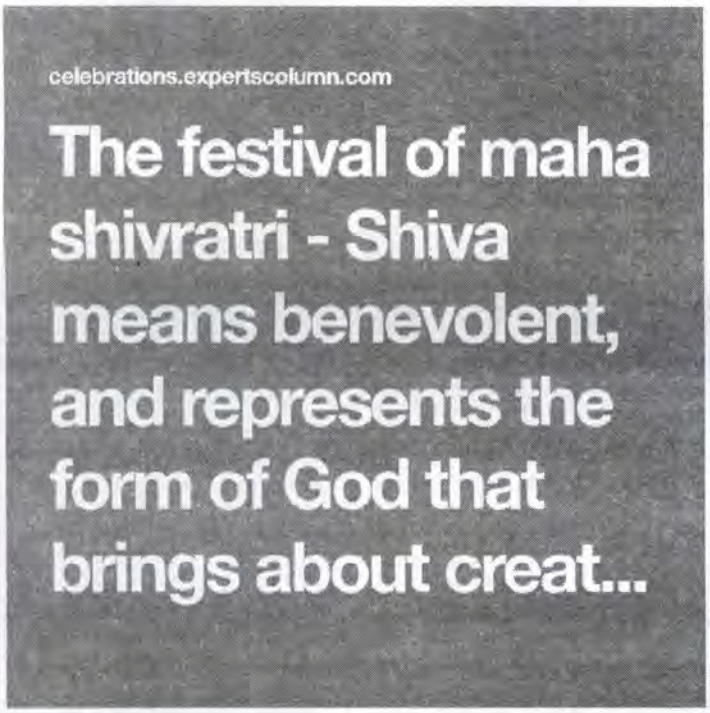

ईश्वर को महादेव कहा जाता है। महादेव का अर्थ है कि ईश्वर हमें अग्नि, वायु, जल आदि देवों से जो पदार्थ, जीवन व सुख प्राप्त होते हैं उनसे भी कहीं अधिक सुख देता है। जब हम विचार करते हैं कि हमारा यह शरीर हमें किसने दिया, तो इसका विवेकपूर्ण उत्तर यही मिलता है कि यह हमें ईश्वर से प्राप्त हुआ है। यह शरीर साधारण शरीर नहीं है अपितु इसमें आंख, नाक, कान आदि पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं और पांच कर्मेन्द्रियां हैं। अन्तःकरण चतुष्टय अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार है, यह सब परमात्मा ने हमारे इस मनुष्य शरीर में दिये हैं। हमारे शरीर में प्राण सबसे अधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं। यदि पांच मिनट भी इन्हें वायु न मिले तो हमारा प्राणान्त हो जाता है। यह प्राण व इसके लिए वायु परमात्मा ने ही हमारे जन्म के पहले से ही बनाकर प्रचुर मात्रा में संसार के सभी भागों में उपलब्ध करा रखी हैं।

हमारे माता, पिता, आचार्य, सगे–संबंधी, इष्ट–मित्र, पत्नी, बच्चे, पुत्र–वधुएं व जामाता सहितअन्न व औषधि आदि सभी पदार्थ भी ईश्वर ने ही हमें प्रदान किये हैं। ये ऐसे पदार्थ हैं कि ईश्वर के अतिरिक्त कोई किसी को नहीं दे सकता।

हम अपने लिए मकान बनाते हैं तो उसकी समस्त सामग्री भी परमात्मा ने ही बनाकर सृष्टि में उपलब्ध कराई है। वैज्ञानिकों ने जितने भी आविष्कार किये हैं उसके लिए उन्हें बुद्धि व आवश्यक पदार्थ व उनमें कार्यरत नियम भी परमात्मा के ही बनाये हुए व उसी की देन हैं। ईश्वर ही हमें ज्ञान, सद्प्रेरणा, सुख व शान्ति देने वाला है। वह लोग धन्य हैं जो त्याग भाव से अपनाजीवन व्यतीत करते हुए अधिक समय ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना में लगाते हैं। सभी मनुष्यों के प्रति सद्भाव रखना, उन्हें शिक्षित करना व उन्हें सद्प्रेरणायें करना मनुष्यों का धर्म है। हमें मानव जन्म मिला है। इसी जन्म में हम अपनी आत्मा व ईश्वर को जान सकते हैं। वेद व वैदिक साहित्य इस कार्य में हमारा सहायक है। हमें प्रयत्न व पुरुषार्थपूर्वक वेद एवं वैदिक साहित्य सहित सत्यार्थप्रकाश आदि ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्ययन कर सत्य को जानने का प्रयत्न करना चाहिए। वेद की शिक्षाओं के अनुसार ही हमारा आचरण भी होना चाहिए।

प्रसिद्व आर्य प्रव्क्ता व लेखक

*****

बट हू विल टेक केयर ?

प्रेम चन्द गुप्ता

पापा बहुत ख़ुश थे कि उनका बेटा विदेश में अच्छी तरह से सैटल हो गया था। बेटे ने वहीं एक विदे ाी युवती से भाादी कर ली और उनके दो बच्चे भी हो गए। अब तो उसने अपना एक अच्छा सा मकान भी ले लिया है और बच्चों के साथ मज़े से वहीं रह रहा है। पापा और मम्मी अब काफ़ी बूढ़े हो गए हैं और अक्सर बीमार रहते हैं। पेंशन के जिन रुपयों से गृहस्थी चल जाती थी अब वो कम पड़ने लगे हैं क्योंकि मँहगाई, दवाएँ और फलों का खर्च बजट बिगाड़कर रख देता है।

माँ ने बार–बार फोन करके बेटे को घर आने के लिए कहा क्योंकि पापा बहुत बीमार चल रहे थे। बेटा किसी तरह समय निकालकर पिताजी की बीमारी का हाल–चाल जानने चला आया। माँ–पिताजी बेटे को देखकर बहुत ख़ुश हुए और बहू और पोते–पोती को साथ न लाने पर नाराज़ भी हुए। आज बरसों बाद रसोई में कई चीज़ें एक साथ बनीं और बेटे को ख़ूब खिलाया–पिलाया।

बेटे ने पिताजी से पूछा, "अब तो इंडिया में भी प्रॉपर्टी के दाम बहुत बढ़ गए हैं। अपना मकान कितने का चल रहा है?" ये सुनकर पिताजी को अच्छा नहीं लगा और वो सुना–अनसुना कर गए। बेटे का अगले दिन ही वापस लौटने का कार्यक्रम था। जाते हुए बेटा इतना ही बोल पाया, " टेक केयर पापा।" यह सुनकर मम्मी की आँखों में आँसू भर आए और वे मन में सोचती ही रह गईं, " बट हू विल टेक केयर?"

प्रश्न उठता है कि क्या मात्र टेक केयर कहने से ही माता–पिता की देखभाल हो जाती है? बुढ़ापे में पैसों की ही नहीं सेवा की भी ज़रूरत पड़ती है। कुछ लोगों की मजबूरी हो सकती है जिसके कारण वे अपने माता–पिता के पास नहीं रह सकते अथवा उन्हें साथ नहीं रख सकते लेकिन माता–पिता को तो उनकी ज़रूरत है। क्या बचपन में माता–पिता किसी विवशता के कारण अपने बच्चों को अपने से कभी दूर होने देते हैं?

प्रायः सभी माता–पिता बच्चों के लिए हर प्रकार के समझौते करने को तैयार रहते हैं फिर उनके बुढ़ापे में बच्चे क्यों नहीं कोई समझौता करने का प्रयास करते? कुछ लोग अपने बूढ़े माता–पिता की सेवा तो नहीं कर पाते लेकिन उन्हें किसी प्रकार की आर्थिक तंगी नहीं होने देते। ऐसे लोग उन लोगों से बेहतर हैं जिनके माता–पिता दाने–दाने को मोहताज हो जाते हैं लेकिन माता–पिता की सेवा करना भी तो बच्चों का ही फर्ज़ है। हम सब अपने फर्ज़ से कैसे मुँह मोड़ सकते हैं?

आज के आधुनिक शिक्षा प्राप्त तथा पाश्चात्य संस्कृति के पुजारी वैसे तो अपने बूढ़े माता–पिता को कभी पूछते नहीं लेकिन मदर्स डे और फादर्स डे पर उपहार भिजवाना नहीं भूलते। बूढ़े माता–पिता को मंहगे उपहार नहीं देखभाल और प्यार की ज़्यादा ज़रूरत है। सबसे बड़ी बात तो ये है कि उन्हें देखभाल की भी कोई ख़ास ज़रूरत नहीं है। वास्तव में उन्हें ज़रूरत है अपने बच्चों के साथ की। बहू और पोते–पोतियों के साथ की। यदि उनकी बहू और पोते–पोतियाँ साथ होंगे तो उन्हें देखभाल की भी कोई ज़रूरत नहीं होगी अपितु वे ही उनके कामों में हाथ बंटा देंगे। परिवार का अभाव ही तो उनके दुख और बीमारी का कारण है।

एकल परिवारों की अपेक्षा संयुक्त परिवारों में रहने वाले माता–पिता और बच्चे सभी अधिक स्वस्थ रहते हैं। साथ रहना सुरक्षा ही नहीं अच्छे स्वास्थ्य का भी मूल है। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो माता–पिता के साथ तो रहते हैं और उनका पर्याप्त आदर–सम्मान भी करते हैं, उनके पैर छूते हैं लेकिन अपने बच्चों को उनके पास तक फटकने नहीं देते। मात्र दिखावे के लिए आदर–सम्मान भी पर्याप्त नहीं अपितु पूर्ण रूप से अपनेपन की ज़रूरत है।

दादा–दादी अपने पोते–पोतियों के साथ घुलमिल कर रहें तभी उन्हें अच्छा लगेगा। दोनों एक दूसरे के साहचर्य से परस्पर लाभांवित भी हो सकेंगे। बच्चे थोड़े बड़े होंगे तो अपने दादा–दादी का काम करेंगे और छोटे होंगे तो उनसे अपना काम करवाएँगे जिससे दादा–दादी अपेक्षाकृत अधिक सक्रिय जीवन व्यतीत कर सकेंगे। यदि सचमुच अपने बूढ़े माता–पिता को स्वस्थ रखना है, उनकी सेवा करनी है तो उनसे उनके पोते–पोतियों का संसार मत छीनिये।

प्रेम नारायण गुप्ता ए.डी.–26–सी, पीतमपुरा,

*****

SWAMI DAYANANDA's RELIGIOUS DOCTRINE.

Swami Dayanand Saraswati, a great scholar of Vedas and the founder of Arya Samaj, reinvented Vedic religion in the nineteenth century, by presenting before the masses the interpretation of God, as given in Vedas. His beliefs are summarized as under.

God

There is one and only one God who is the creator of this Universe, though He is called by different names in accordance with His qualities. For example, He is called 'Indra' because he is all powerful, Brahma- since he is the creator of whole Universe, like wise he has hundreds of names in accordance with his qualities. He is Omniscient, whom we feel in the interior of our hearts and is not something heavenly residing or does not have his abode on mountains or in the walled temples. He is Formless, Omnipresent, Unborn, Infinite, Almighty, Just and Merciful and is the embodiment of all true knowledge.

If God is unborn why do many worship Rama and Krishna as Gods ?

Neither Ram nor Krishana were Gods and for that matter no body who takes birth can be a God but great souls like Ram and Krishana by their communion *Upasana* with God, become God like. When soul comes close to God, it rids itself of all impurities, sorrows and grief's and its nature, attributes and character becomes pure like those of God Himself, just as a man shivering from cold ceases to suffer from it by coming close to the fire. From time to time such noble souls tread on earth and after meeting them a spontaneous reaction is-it looks as if God himself has descended on earth. These noble souls are the people who with their 'Upasana' attain the state of salvation."

Has God any form, If not then how to worship Him?

God has no form? He is incorporeal and infinite. Whatever is seen in the world shadows forth His greatness. The one, who sees Him in flowers, dales, streams and in gushing rivers, does not visit temples with the sole purpose of worshipping Him. Everything in this Universe- animate or inanimate points to the Creator who is none other than God and He is seen through all his work. Our prayer to God and accepting him as the ultimate power is Worship. God is Omnipresent, so prayer can be offered anywhere and every where. Temple is chosen to offer prayer because of the peaceful and divine environ it provides.

Who are Aryas and what are the objectives of Arya Samaj ?

The good people, who follow path of dharma, as enshrined in Vedas, are Aryas. The congregation of good people is Arya Samaj. Doing good to

*****

whole World is the primary object of Arya Samaj i.e. to look to its physical, spiritual and social welfare. Emphasis is on considering the entire Universe as the family and to work for the good of all human beings without confining to any particular religion, sect or caste. What he propounded was not some new religion but 'Vedic dharma' based on Vedas and what is written in Vedas does not apply to a particular group, faith or sect. The sentiments expressed in the following 'sukti' 'vasudaiva Kutumbakam'- the world is one family-frees the seeker from limitations of time. space, place and thoughts.

What is Dharma and who is a man?

Dharma is practice of equality, Justice together with that of truthfulness in word, deed and thought . He alone is a man who possesses a thoughtful nature and feels for others in the same way as he does for his own self. Does not fear the unjust however powerful he may be. He exerts himself to protect the righteous.

Who are Brahmans, Kashatrayas, Vaishyas and Shudras ? When did they come to be classified and what were the bases?

The four classes came to exist by the reason of diversity of men's occupation. The teachers of the science of divinity came to be called 'Brahmans', the conductor of military affairs ' Kashatrayas', the traders in commodities 'Vaishayas' and menial servants 'Shudras' He is not a Brahman who even after having born in a Brahman family is doing a profession of trader and so forth with the rest.

Thus the classification of people in to castes is based on the profession they do and is not al all hereditary and such classification was done by men only.

What is Dayanand's perrception of women in the society?

Woman holds supreme place in the family as well as in the society. She should be respected by all including her parents, brothers, husband and in-laws. The family where woman is worshipped attains prosperity while the family which shows disrespect to women is soon invaded by problems and sorrows. Woman has as much right to education and occupation as a man has and she has a freedom to marry a man of his choice.

What is the difference between Budha's perception and Swami Dayanand's perception of Vedas ?

A man was carrying a herd of buffaloes for a sacrifice before his deity when Budha came to know his motive; he was pained and asked him why he was doing like that. The man replied that because Veda's said like that. Budha said if this was the case then he did not accept such Vedas. On hearing this the man said "your saying like this holds no water since Vedas are created by God. "I don't accept such a God" replied Budha,

Facing similar situation, Swami Dayanand said, "Show me where Vedas sanction sacrifice of animals"

Thus using his deep knowledge of Vedas he presented before people the right interpretation of Vedas which paved way for spread of education, especially amongst women and rid the society of evils and superstitions.

*****

रजि. नं. : 4262/12

।। ओ३म् ।।

फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

Gurpreet Singh Kang celebrating her daughter's birthday with slum children

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक वहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

मधुकर कौड़ा लेखराम (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी शिमला का मशहूर कामधेनु जल

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489, Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Mrs and Mr Navneet

Pratima Khurana

Raj Kumari

Mrs and Mr Navneet

Vidur S/o Vishavbandhu

Vinod Bala

मजबूती में बे-मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/-, 75 words Rs. 100/-

Contact : Bhartendu Sood, # 231, Sector 45-A, Chandigarh-160047
Tel.: 0172-2662870, Mob.: +91-9217970381
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in